Volume 1; Issue 1;
Oct-Dec. 2024

E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika
संस्कृति-संवाहिका

Peer Review Indexed Refreed Journal

Quarterly Journal

Editor-in-Chief

Dr. Ashwini Devi

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका
E-ISSN: 3048-6742
https://sanskritisamvahika.in
Volume 1; Issue 1; Oct.-Dec. 2024; Page No. 21-27
Peer Review, Indexed and Refreed Journal

महाभारत में क्षमा की अवधारणा

रुचि मिश्रा
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग
जगत तारन महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश: *शतसाहस्री संहिता व पञ्चमवेद के नाम से अभिहित महाभारत में उपदिष्ट क्षमाधर्म मनुष्य का स्वाभाविक व नैतिक धर्म है, क्षमा दुर्बल मनुष्यों का गुण व बलवानों का आभूषण है, क्षमा गुणवानों का बल व शान्ति का उत्तम उपाय है। क्षमा-धर्म को महाभारत में मनुष्य कल्याण के मार्ग के रूप में बताया गया है। महत्त्व, आकार एवं गौरव के कारण महाभारत के नाम से अभिहित महाभारत केवल भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु विश्ववाङ्मय का सबसे विशाल व अद्वितीय ग्रन्थ है। इसके प्रणेता महर्षि 'पराशर' व 'सत्यवती' के पुत्र 'कृष्ण द्वैपायन' हैं, जो लोक में वेदव्यास के नाम से प्रसिद्ध हैं। महर्षि वेदव्यास का नाम अन्वर्थसंज्ञक है- शरीर का श्याम वर्ण होने से 'कृष्ण', द्वीप में जन्म होने से 'द्वैपायन', वेदों का विभाजन कर्ता होने के कारण 'वेदव्यास', यमुना नदी के बदरीयुक्त द्वीप में जन्म होने से ये 'बादरायण' नाम से भी जाने जाते हैं।*

कूट शब्द- क्षमा, व्यास, उपाख्यान, निबोधयत, सुकृत, अभिजात, लोक, परलोक।

महत्त्व, आकार एवं गौरव के कारण महाभारत के नाम से अभिहित महाभारत केवल भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु विश्ववाङ्मय का सबसे विशाल व अद्वितीय ग्रन्थ है। इसके प्रणेता महर्षि 'पराशर' व 'सत्यवती' के पुत्र 'कृष्ण द्वैपायन' हैं, जो लोक में वेदव्यास के नाम से प्रसिद्ध हैं। महर्षि वेदव्यास का नाम अन्वर्थसंज्ञक है- शरीर का श्याम वर्ण होने से 'कृष्ण', द्वीप में जन्म होने से 'द्वैपायन', वेदों का विभाजन कर्ता होने के कारण 'वेदव्यास', यमुना नदी के बदरीयुक्त द्वीप में जन्म होने से ये

'बादरायण' नाम से भी जाने जाते हैं। महर्षि व्यास विरचित महाभारत प्रमुख इतिहास ग्रन्था भी है।

द्वीपे जातोयतो बालस्तेन द्वैपायनो भवत्।
वेद शाखा विभजाद्वेदव्यासः प्रकीर्तितः।।[1]
महत्त्वाद् भारवत्वाच्च महभारतमुच्यते[2]
इतिहासोत्तमे यस्मिन्नर्पिता बुद्धिरुत्तमा[3]
ह्रदानामुदधि श्रोष्ठो गौर्वरिष्ठा चतुष्पादम्।
यथैतानीतिहासानां तथा भारतमुच्यते।।[4]

भारतीय आत्मा के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास रखने वालों की आस्था का एकमात्र केन्द्र महाभारत में निहित मान्यताएँ शाश्वत व सार्वदेशिक हैं। तात्पर्य यह है कि महाभारत केवल अपने समय के जीवनमूल्यों और घटनाओं को ही नहीं बताता, अपितु आज के जीवनमूल्यों के लिए भी उतना ही प्रासङ्गिक है जितना पहले था। महाभारत एक उपजीव्य महाकाव्य है उसकी उपजीव्यता स्वयं व्यास ने उद्घोषित किया है-

'सर्वेषां कविमुख्यानामुपजीव्यो भविष्यति'[5]

पञ्चमवेद के नाम से अभिहित महाभारत इतना महान व विशिष्ट है कि इसकी तुलना के लिए एक ओर इसको और दूसरी ओर साङ्गवेद, धर्मशास्त्र तथा अट्ठारह पुराणों आदि को रखा जाता है-

अष्टादशपुराणानि धर्मशास्त्राणि सर्वशः।
वेदाः साङ्गास्तथैकत्र भारतं चैकतः स्थितम्।।[6]

महर्षि व्यास का यह कथन यथार्थ है कि जो कुछ महाभारत में है वही सब कुछ भारतवर्ष के साथ-साथ अन्य राष्ट्रों में भी है और जो इसमें नहीं है वह भारतवर्ष के साथ-साथ अन्य राष्ट्रों में भी नहीं है।

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्।।[7]

महाभारत महाकाव्य के विकास के तीन चरण हैं। प्रथम चरण 'जय' नाम से अभिहित, द्वितीय अवस्था 'भारत' व तृतीय चरण 'महाभारत' नाम से प्रसिद्ध हुआ। जय में 'अट्ठासी सौ श्लोक', भारत में 'चौबीस हजार' श्लोक व महाभारत में एक लाख श्लोक होने से इसको शतसाहस्री संहिता कहा गया।

अष्टौ श्लोक सहस्राणि अष्टौ श्लोकशतानि च।[8]
चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रे भारत संहिता[9]
एकं शतसहस्रं तु मयोक्तं वै निबोधयत[10]

महाभारत के सम्पूर्ण प्रबन्धयोजना में अट्ठारह संख्या का विशिष्ट महत्त्व है। महाभारत का युद्ध अट्ठारह दिनों तक चला, इसका प्राणतत्त्व श्रीमद्भगवद्गीता में अट्ठारह अध्याय व महाभारत में अट्ठारह ही पर्व भी है- आदिपर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराटपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व, आश्रमवासिकपर्व, मौसलपर्व, महाप्रस्थानिकपर्व व स्वर्गरोहणपर्व।

'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्' जो इसमें है वो अन्यत्र भी और जो इसमें नहीं है वो अन्यत्र भी अप्राप्त है इस उक्ति को चरितार्थ करने वाला महाभारत में निहित विषयवस्तु का मुख्य प्रयोजन मानव कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करना है, महाभारत यद्यपि एक परिवार के दो पक्षों के युद्ध का विशद विवेच करता है, परन्तु अगर उसको सूक्ष्मदृष्ट्या देखा जाय तो उस युद्ध के पीछे का मुख्य का कारण मानव कल्याण व उनका जीवन मूल्य है। अन्ततः 18 दिन के इस घनघोर युद्ध का जब परिणाम आया तो उसमें अधर्म पर धर्म की विजय पताका फहरी। मानव कल्याण के पुरुषार्थ चतुष्ट्य को विषयवस्तु बनाने वाले महाभारत में यद्यपि अनेकानेक धर्म- राजधर्म, वर्णधर्म आदि हैं उन्हीं धर्मों में एक क्षमाधर्म भी मुख्य है जो मनुष्य के इहलोक के जीवन और परलोक मार्ग को सुगम बनाते हैं।

क्षमा को शीलवान का शस्त्र, प्रेम का परिधान और ईर्ष्या का निदान कहा जाता है। क्षमा एक अभ्यास और स्वतंत्रता है। क्षमा एक ऐसी कुंजी है जो खुशी और शान्ति के द्वार को खोलती है। भगवान श्रीकृष्ण क्षमा की गणना 26 दिव्य गुणों में कर के क्षमा को मुक्ति मार्ग बतलाते हैं-

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।

भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।।[11]

यह 'क्षमा' शब्द क्षम्+अङ्+टाप् प्रत्यय से बना है जिसका अर्थ है धैर्य व सहिष्णुता।

श्रीमद्भागवद्पुराण में 'ऋषि जमदग्नि' कहते हैं कि एक ब्राह्मण (एक आध्यात्मिक बुद्धिजीवी) का यह परमकर्तव्य है कि क्षमा के गुणों को विकसित करना, जो सूर्य की तरह प्रकाशमान हो। परम ब्रह्मपरमेश्वर श्रीहरि क्षमाशील प्राणियों से प्रसन्न रहते हैं।[12]

महाभारत में क्षमा धर्म को सब धर्मों से उत्तम बताया गया है- 'क्षमा धर्मोह्यनुत्तमः'। क्षमा ही सत्य है, क्षमा ही दान, क्षमा ही धर्म और क्षमा ही तप है। क्षमाशीलप्राणी के लिए ही इहलोक और परलोक है।

क्षमा सत्यं क्षमा दानं क्षमा धर्मः क्षमा तपः।

क्षमावतामयं लोकः परलोकः क्षमावताम्।।[13]

काव्यशिरोमणि महाभारत के सम्पूर्ण पात्रों में महाराज युधिष्ठिर के चरित्र में क्षमागुण सर्वाधिक दिखता है। यक्ष के प्रश्न करने पर कि उत्तम क्षमा क्या है तब महाराज युधिष्ठिर कहते हैं- कि सर्दी-गरमी आदि द्वन्द्वों को सहन करना ही क्षमा है।

''क्षमा द्वन्द्वसहिष्णुत्त्वं''[14]

क्षमा दुर्बल मनुष्यों का गुण और बलवानों का आभूषण है। क्षमा शान्ति का उत्तम उपाय, क्षमा से सहिष्णुता तथा अनेक लोक सरलता से मिल जाते हैं।

'क्षमा गुणो ह्यशक्तामनां शक्तानां भूषण क्षमा'।।[15]

'क्षमैवा शांतिस्तमा'।।[16]

'क्षमया विपुला लोकाः सुलभा हि सहिष्णुता'।[17]

पितामह भीष्म युद्धसम्बन्धी नीति का निर्देश करते हुए कुन्तीनन्दन महाराज युधिष्ठिर से कहते हैं कि सन्त पुरुषों को सदा क्षमा करना आता है, क्षमा उनका गुण है, दुष्ट व्यक्ति कभी भी क्षमा नहीं करता है। क्षमा के प्रयोजन को बताते हैं कि जो राजा अपने शत्रुओं को जीत लेने के पश्चात उनके द्वारा किये गये अपराध को क्षमा कर देता है तो ऐसे राजा का यशोगान बढ़ता है और उसके प्रति (शत्रु) महान अपराध करने पर भी शत्रु उस पर विश्वास करता है।

क्षमा वै साधुमायाति न ह्यसाधून्क्षमा सदा।
क्षमायाश्चाक्षमायाश्च पार्थ विद्धि प्रयोजनम्।।
विजित्य क्षममाणस्य यशो राज्ञो विवर्धते।
महापराधे ह्यप्यस्मिन् विश्वसन्यपि शत्रवः।।[18]

क्रोध से तपस्या नष्ट होती है इसलिए ऋषिजन भी भावावेश या आवेश में आकर किसी को शाप नहीं देते। द्रोपदी यह बात बहुत अच्छी तरह जानती थी यही कारण है की कीचक के द्वारा अपमान करने पर भी द्रौपदी उसको शाप नहीं देती। वह जानती है कि क्षमा धर्म है, क्षमा दान है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा यश है, क्षमा सत्य है, क्षमा शील है, क्षमा कीर्ति है, क्षमा ही सबसे उत्कृष्ट तत्त्व है, क्षमा पुण्य है, क्षमा तीर्थ है और क्षमा ही सब कुछ है, परलोक भी क्षमावानों का ही है। इसलिए द्रौपदी ने कीचक के विष भरे हुए शब्दों को सुनकर भी उसको शाप न देकर क्षमा कर दिया।

क्षमा धर्मः क्षमा दानं क्षमा यज्ञः क्षमा यशः।
क्षमा सत्यं क्षमा शीलं क्षमा कीर्तिः क्षमा परम्।।
क्षमा पुण्यं क्षमा तीर्थं क्षमा सर्वमिति श्रुतिः।
क्षमावतामयं लोकः परश्चैव क्षमावताम्।
एतत् सर्वं विजानन्ती सा क्षमामन्वपद्यत।।[19]

पुरुषोत्तम मधुसूदन जनार्दन श्रीकृष्ण में क्षमा धर्म स्पष्ट रूप दिखायी पड़ती है कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर के दूत बनकर जब दुर्योधन की राज्यसभा में आते हैं तो वहाँ शिशुपाल उनका उपहास करता है, कटुवचनों का प्रयोग करता है इससे दुखी होकर भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि अभी तक मैं इसके सारे अपराध क्षमा करते आया हूँ, क्योंकि इसकी माता की याचना करने पर मैंने उन्हें प्रार्थित वर दिया था कि शिशुपाल के सौ अपराध क्षमा कर दूँगा-

शृण्वन्तु मे महीपाल येनैतत् क्षमितं मया
अपराधशतं क्षाम्यं मातुरस्यैव याचने।।[20]

महाभारत के द्रोण पर्व में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि जहाँ वेद, सत्य, दम, शौच, धर्म, लज्जा, श्री, धृति और क्षमा का निवास होता वहाँ मैं सदैव सुखपूर्वक रहता हूँ-

ब्रह्म सत्यं दमः शौचं धर्मो ह्रीः श्रीर्धृतिः क्षमा[21]

ऋषि शमीक अपने पुत्र शृङ्गी ऋषि को क्षमा की महत्ता का उपदेश देते हुए कहते हैं कि क्षमा ही श्रेष्ठ धर्म, क्षमा सम्पन्न व्यक्तियों के लिए एकमात्र शम ही सिद्धि का हेतु है और वे यहाँ तक कहते हैं कि क्षमा के द्वारा ही इहलोक और परलोक को वश में किया जा सकता है। अतः तुम सदा क्षमा का सेवन करना-

शम एव यतीनां हि क्षमिणां सिद्धिकारकः

क्षमावतामयं लोकः परश्चैव क्षमावताम्[22]

राजा ययाति ने अपने पुत्र पुरु को उपदेश दिया कि शान्त व्यक्ति क्रोधी व्यक्ति से तथा क्षमाशील मनुष्य सहिष्णु व्यक्ति की अपेक्षा महान् होता है-

अक्रोधनः क्रोधनेभ्यो विशिष्टस्तथा

तितिक्षुरतिति क्षोर्विशिष्टः।[23]

वे कहते हैं कि यदि कोई निन्दा या गाली दे तो प्रतिकार में हमें निन्दा या गाली गलौज नहीं करें, क्योंकि जो निन्दा आदि को सहन कर लेता है, उस पुरुष का आन्तरिक दुःख ही गाली देने वाले या अपमान करने वाले को जला डालता है। साथ ही उसके पुण्यों को भी वह ले लेता है। राजा ययाति कहते हैं कि जिन वचनों से किसी को कष्ट न पहुँचे, उनको बोलना। मैत्री, दया और क्षमा दान के द्वारा ही सब को अपना बनाया जा सकता है।

आक्रश्यमानो नाक्रोशेन्मन्युरेव तितिक्षतः।

आक्रोष्टारं निर्दहति सुकृतं चास्य विन्दति।।

न हीदृशं संवननं त्रिषु लोकेषु विद्यते।

दया मैत्री च भूतेषु दानं च मधुरा च वाक्।।[24]

नीतिविशारद महात्मा विदुर कहते हैं कि चरित्र की मृदुता अनसूया, क्षमा, धैर्य व मैत्री मनुष्य के उम्र को बढ़ाती है-

मार्दवं सर्वभूतानामनसूया क्षमा धृतिः।

आयुष्याणि बुधा प्राहुर्मित्राणां चापि मानना।।[25]

क्षमाशील व्यक्ति के द्वारा किया गया धर्माचरण निरर्थक होता है, क्योंकि क्षमा ही धर्म है, क्षमा ही यज्ञ है, और क्षमा ही श्रेष्ठ तपस्या है-

क्षमा धर्मः क्षमा यज्ञः क्षमा वेदाः क्षमा श्रुतम्।

य एत देवं जानाति स सर्वं क्षन्तमुर्हति।।[26]

महाभारत में कहा गया है कि पहले किसी भी प्रकार का उपकार किये गये व्यक्ति से यदि जाने अनजाने में कोई गलती या अपकार हो भी जाए तो क्षमा कर देना चाहिए। मनुष्य यदि बिना सोचे समझे भावना के वश में होकर अगर दुर्व्यवहार कर बैठे तो उसे क्षमा कर देना चाहिए या क्षमा का अधिकारी होता है।

परन्तु महाभारत में एक ओर यह भी कहा गया है कि जो मनुष्य जानबूझ कर बुरा बर्ताव करे और बाद में झूठ बोले ऐसे शठ, पापात्मा को कभी भी क्षमा नहीं करना चाहिए। जो सदैव क्षमा करता है उसे अनेक दोष प्राप्त होते हैं-

''यो नित्यं क्षमते तात बहून दोषान् स

विंदति''[27]

क्योंकि सदा क्षमा करते रहने को विद्वानों ने वर्जित किया है-

नित्यं क्षमा तात पण्डितैरपि वर्जिता[28]

एक अपराध के लिए प्रत्येक व्यक्ति को क्षमा मिलनी चाहिए। समान जातीय व्यक्ति अगर दूसरी बार गलती करें तो उसे क्षमा करना उचित नहीं। पापी क्षमा के योग्य नहीं होता है।

''न तु पापोऽर्हति क्षमाम्''[29]

जो सहने योग्य व्यवहारों तथा प्रिय एवं अप्रिय वचनों को भी सम रूप से वहन करता है, वही सर्वसम्मत क्षमाशील श्रेष्ठ पुरुष है। सत्यवादी पुरुष को ही उत्तम रीति से क्षमाभाव की प्राप्ति होती है-

अक्षमायाः क्षमायाश्च प्रियाणीहाप्रियाणि च।
क्षमते सम्मतः साधु साध्वाप्नोति च
सत्यवाक्।।[30]

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाभारत में क्षमा मनुष्यों का सर्वश्रेष्ठ आभूषण बताया गया है। मानव जीवन के इहलोक व परलोक का मार्ग क्षमा है, क्षमा ही यज्ञ व यश है, क्षमा सनातन धर्म है। क्षमा सभी कार्यों एवं सभी पुण्यों में सर्वश्रेष्ठ है और क्षमा मनुष्य का स्वाभाविक एवं नैतिक धर्म है। क्षमा के बिना प्रेम सम्भव नहीं है और प्रेम के बिना क्षमा सम्भव नहीं है। ईमानदारी से मांगी गयी क्षमा व्यक्ति को अच्छे सम्बन्धों और सफलता की ओर ले जाती है। मनुष्य का धर्म है कि किसी पर क्रोध न करे। यदि कोई व्यक्ति विनम्र होकर पश्चाताप करता है तो क्षमा का अवसर उसके सामने आता है। क्रोध मनुष्य के लिए अत्यधिक दुःखदायी होता है- क्रोधो दुःखतरो नृणाम्। महाभारत में क्षमा धर्म के स्वरूप का वर्णन है वह एक कहावत नहीं, बल्कि शाश्वत एवं वैज्ञानिक है। अतः उसे स्वीकार करना ही प्रत्येक मानव का धर्म है। इस भौतिकवादी युग में भौतिकता के चकाचौंध में मनुष्य की दृष्टि इस सूक्ष्मतत्त्व 'क्षमा' का अवलोकन में असमर्थ होती प्रतीत हो रही है।

विश्व के कई देशों में आपस में चल रहे युद्ध का अन्त नहीं हो रहा है, बल्कि उनके पक्ष और विपक्ष में कई देश खड़े होते नजर आ रहे हैं जिससे वे देश युद्ध में शामिल न होते हुए भी युद्ध के दुष्परिणामों से प्रभावित नजर आते हैं। ऐसे समय में यदि आपस में युद्ध कर रहे देशों में कोई भी एक देश अपने क्षमाधर्म को अपपनाकर धैर्यपूर्वक संयम बरतें तो वहाँ के लोगों को जीवनदान मिल सकेगा, जो अनायास ही युद्ध की भेंट चढ़ रहे हैं।

राजनीति के क्षेत्र में राजनेताओं के बीच धर्म, जाति और साम्प्रदायिकता को लेकर दिन-प्रतिदिन वाद-विवाद और दंगे फसाद हो रहे हैं। एक पक्ष किसी दूसरे पक्ष की बात नहीं सुन रहा है, दोनों पक्ष का व्यक्ति अपनी-अपनी बात मनवाने में अपना धैर्य खो दे रहा है, यदि ये राजनेता लोग इन सब वाद-विवाद को छोड़कर धैर्य और धर्मसहिष्णुता को अपनाकर

कार्य करें तो राजनीति में हो रहे धर्म के नाम पर झगड़े का अन्त हो जाये। आज परिवार में अशान्ति भरा माहौल है। इस अशान्ति का कारण यह भी है कि अपने ही लोग अपने व्यक्ति को क्षमा नहीं करते हैं जिससे परिवार में कलह बढ़ रहा है, परिवार में शान्ति, सुख, समृद्धि बनाये रखने के लिए क्षमाशील होना परमावश्यक है, क्योंकि क्षमा ही स्नेह और वात्सल्य का परिधान व घृणा का निदान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. देवीभागवत- 2-3-41

2. महा. आदिपर्व- 1-274

3. महा. आदिपर्व- 2-39

4. महा. आदिपर्व- 1-265-66

5. महा. आदिपर्व- 2.385

6. संस्कृत वाङ्मय का वृद्ध इतिहास- पृ. 429

7. महा. आदिपर्व- 62-53

8. महा. आदिपर्व- 1-81

9. महा. आदिपर्व- 1-101-102

10. महा. आदिपर्व- 1-109

11. श्रीमद्भगवद्गीता- 16-3

12. भागवद्पुराण- 9-15.40

13. महा. विराटपर्व- 16-42

14. महा. वनपर्व- 313-88

15. महा. उद्योगपर्व- 33-49

16. महा. उद्योगपर्व- 33-52

17. महा. शांतिपर्व- 160-35

18. महा. शान्तिपर्व- 102.29-30

19. महा. विराटपर्व- 16-51

20. महा. सभापर्व- 45-23

21. महा. द्रोणपर्व- 181-29

22. महा. आदिपर्व- 42-9

23. महा. आदिपर्व- 87-6

24. महाभारत आदिपर्व- 81-1

25. महा. उद्योगपर्व- 39/57.60

26. महा. वनपर्व- 29-25

27. महा. वनपर्व- 28-7

28. महा. वनपर्व- 28.8

29. महा. द्रोणपर्व- 198.26

30. महा. शान्तिपर्व- 162-14

----०----